भारतीय संस्कृति को भारतीय ही नहीं समझ रहे हैं

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 13 मई।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि विदेशी लोंं को भारतीय संस्कृति आकृष्ट कर रही हैं वे इसके महत्व को समझ रहे हैं, पर भारतीय लोग इस रहस्य को समझ नहीं पा रहे हैं वे समाधान परक भारतीय संस्कृति को छोड़, पाश्चात्य संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। अपेक्षा इस बात की है कि इस देश में रहने वालों को भारतीय संस्कृति से परिचय करवाएं, जिससे नया मोड़ आ सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने इलेक्ट्रोनिक मीडिया के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी लोगों को भारतीय संस्कृति एवंज ैन दर्शन में समाधान दिखाई देता है इसलिए जैन मुनि बनने के लिए तैयार हो रहे हैं। किसी को भी बल प्रयोग के द्वारा रोका नहीं जा सकता। जब इस समाधान को भारतीय लोग देखने लग जायेगी तो इस संस्कृति का महत्त्व और ज्यादा बढ जायेगा। सात समुद्र पार से आपके पास श्रद्धालु आ रहे हैं इसका क्या कारण है के जवाब में आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि सीमाएं व्यवस्था की दृष्टि से होती है। अध्यात्म के लिए कोई सीमा नहीं है। वह सीमातीत है, असीम है। यहां पर मानवीय एकता, प्राणी जगत की एकता, उससे भी आगे आत्मा की एकता का ज्ञान कराया जाता है, इसलिए यहां के प्रति सबका आकर्षण है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि भारतीय संस्कृति स्वाध्याय प्रधान है, संयम प्रधान है। उन्होंने रसियन बालक के मुनि बनने की इच्छा के बारे में कहा कि बालक के भीतर संस्कार जागृत हुआ है। जब भीतर की चेतना जागती है तभी सर्द जगह पर रहने वाला इतनी गर्मी में रह सकता है, पद यात्रा कर सकता है। मीडिया प्रतिनिधियों को मुनि जयंतकुमार ने भी संबोधित किया।

विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती तुलसी आर्ट गैलेरी

लाडनूं, 13 मई।

इन दिनों जैन विश्व भारती स्थित तुलसी आर्ट गैलेरी में सजी भगवान ऋषभ, भगवान पार्श्व, भगवान महावीर के जीवनवृत्त को उकेरे चित्र, हस्त निर्मित नारियल के विभिन्न पात्र, जैसा कर्म वैसा फल को दर्शाति हस्त पैंटिंग देशी विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है।

राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ का सान्निध्य प्राप्त करने, प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेने के साथ तुलसी आर्ट गैलेरी की कलाकृतियों का आकर्षण सात समुद्र पार से खींच ले आता है। रसिया से आये एक ग्रुप ने जब आर्ट गैलेरी को निहारा तो सहसा उनके मुंह से निकल पड़ा 'वंडरफूल'। यहां आने वाले प्रत्येक पर्यटक का एक ही झूमला होता है कि इतने दिनों तक हम यहां क्यों नहीं आये। हमें ऐसी अद्भूत कला कृतियों को बहुत पहले ही देख लेना चाहिए।

मुनि जयंत कुमार ने बताया कि तुलसी आर्ट गैलेरी में 11वीं शताब्दी के ताड़पत्र, 16वीं शताब्दी की पाण्डुलिपी, सूक्ष्म लिपी में एक पत्र में लिखी गीता, कैंची की कंटींग से बने महावीर जीवन दर्शन के चित्र, नारकीय वेदना को दर्शाती पैंटिंग पर्यटकों को विशेष आकर्षित कर रहे हैं। बालक–बालिकाओं को विशेष तौर पर बुद्धि परीक्षा के काउंटर रूकने के लिए बाध्य करते हैं। इस काउंटर पर ऐसे हस्त निर्मित चित्र है जिनमें छूपे हुए आकृतियों को ढूंढना होता है। उन्होंने बताया कि यह आर्ट गैलेरी जैन दर्शन, जैन इतिहास, जैन आर्ट को संजोये होने के साथ भारतीय संस्कृति, मानवीय एकता एवं आधुनिक आर्ट का संगम स्थल है।

संलग्न फोटो –

''तुलसी आर्ट गैलेरी में कलाकृतियोंको निहारते विदेशी सैलानी''